

पुस्तक

2020 I



श्रीगणेशाय नमः

श्रीगणेशाय नमः



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ श्री
 गुरुवे नमः ॥ ॥ अथ कुं
 राडी विधि लिख्यते ॥ ॥ अ
 थ काम नोक्तं ॥ ॥ आदौ य
 जमाना चंमः ॥ ततो ब्राह्मणा
 चंमः ॥ पुष्पभाजनं ॥ अथ
 त्यादि ॥ काथी नुस्तारे रावा
 क्यं ॥ ॥ यजमानस्य मुक्
 देवस्य वा ॥ प्रासादस्य बर्
 वं इन्द्राय जावरो हराय धो
 तै फलप्राप्तिकामयशनिमि
 त्यथ कमरादुलु पुष्पभाजनं
 समर्पयामिनमः ॥ ॐ मिद्रि
 रत्तु इत्यादि ॥ १ ॥ ॐ शुद्धशा
 तं शिवप्रसादपरमः सर्व
 शोभंती श्वरः स्नानं देवुर

नायकश्च भगवान् संपूर्ण
कामप्रदः ॥ वागीशो वरदः
वाग्भव प्रदो वासादिचक्रैश्च
रोऽद्याधि शोकविनासकृद्भ
यहृन्मयञ्जय ग्राहिमाः ॥ १ ॥
कमराडनुपुष्यभाजनं सम
र्पयामि ॥ १ ॥ ततः पूजनं ॥
ॐ संपूर्णकलशायः दक्षिण
मापतये स्वस्थाने क्षेत्रपा
ले वहि दारां गणेशायः श्रीग
र्भनाथाय सा सदाशिवगुरु
लक्ष्मीः ५ स्वदेवता वरदान
गराजे भ्यः गरागो ग्रासः को
मारीः श्रीलक्ष्मी भ्यां इदम
सर्जनं नमः ॥ पुष्पं नमः ॥ पुजा
भाराडशालगाददे ॥ ॥ ग्रा
हणा च मयः ॥ ३ ॥ नमः ॥

कारयेत् ॥ १ ॥ पूर्ववत् वाक्य
॥ कर्तुं भगवते श्रीसूर्याय
अर्घ्यं नमः ॥ ॐ आरुमेति ॥
॥ १ ॥ पुष्पं नमः ॥ गुरुनमस्कार
॥ नमः ॥ ॐ भूः ॐ भुवेति ॥
ॐ कारदशकेना चर्चयान् पूजा
॥ ॥ तेजो लोनामपूजनं कथ्य
॥ ॥ गुरुमकुशः समिधं वा म
हत्तु गृहिणा ॥ १ ॥ महो देवदे
वग्रहं ताः शोदशी शर्मयद्बु
॥ हृदपाप्मानं योऽस्मां देहि य
च वदन्दिभ्यः ॥ १ ॥ इति पूजा ॥
ततो वलिप्रदानं ॥ ॥ ॐ गरा
पतिः ॥ ॐ गरागो ग्रासः ॥ १ ॥ इति
वलिः ॥ ॐ नमो वभुशायैति ॥
॥ १ ॥ दुर्गा वलिः ॥ ॐ यातवेदसे
सुमनो गामलो ममराती यतो
निदहाति वेदः ॥ स न प रि ष द

तिदुर्गाणि विश्वानावेव सिंधु
दुर्गाणि यन्निः ११ दिग्बलिः
ॐ हंतं हंतं पावानः पिवत
वसावसा पावानः पिवता न
रिष्टस्य हविरसि स्यात् ॥ दि
शः प्रदिशः ॥ आदिशो विदि
शो दिग्भ्यः स्वाहा ११ धूपः
दीपः ॥ जपः ॥ स्तोत्रः ॥ ॐ नित्या
नंदमयं शास्त्रं निर्विकारं नि
रमयं ॥ यो मातीतं परं शा
स्त्रं भो रवं तं न माम्यहं ॥ ११
वसिष्ठसुक्तं ॥ ॥ लाजा
विष्टे पनः ॥ ॐ नमो विष्णु
देवे ११ गायत्री मन्त्रेण
ऊराद निरिष्टरा ॥ ॐ यदे
वा देव हरेऽनं देवा स शुभं ह
तमा वयः ॥ अग्निमीतस्मा

देन सो विश्वामुच्यं च ह
सः ११ परिसमूहनः ॥ ॐ मा
नसो केतनं ये मानः ११ उप
लेपनः ॥ ॐ कां हतो विदुः स
पतिन रत्नां कादा स वतिः ॥
वशी करनः ॥ ॐ नानाया मिः
११ अभूदा ताः ॥ गायत्री
ऊरताः ॥ ॐ पादुमे नः ॥ द्विती
नः उतारे उतारे नः मध्ये आग्रे
यां पदि मेरे रवा दक्षिणे पि
र देवता उतारे सोम देवत्वं
प्राजापत्यं तु मध्यमे ॥ अभ्य
स्थानि धाम ॥ ॐ
ॐ अभ्यर्थं च स मां अभ्यर्थय
मेवाहता स नः ॥ लोका चतुर्द
शं गीतं गायत्री नित्यं ॥ ११ स
मी करताः ॥ ॐ सदस्य पतिम

भूतं पिबमिदं स्य काम्यं स
निमो धाम या सिव धं त्याग
॥१॥ धाम धाम पदार्थः ॥१॥ श्री ह
यश्च मेः ॥१॥ श्री हि हं पदार्थः ॥
अर्धं नागो द के ना भू हं पदार्थः ॥
ॐ देव स्य ताः ॥१॥ विर रा सनः
॥१॥ हि र राय ग भः ॥१॥ पीत चू
र्ण नः प द्य लिखे रः ॥१॥ प द्या न
ने प द्या उक्त प द्या धि प द्य स
भं देः ॥१॥ न मे भ डा लि प द्या धि
येन लो र धं ल भा म्य हं ॥१॥ धृ तं
नि धायः ॥१॥ ते उ जे सिः ॥१॥ पु ष्या
सनः ॥१॥ श्री श्व ते ॥१॥ पं च शू त्रे
रा कु राड वे र ये रः ॥१॥ र ह्यो ह ता
व ल ग ह नं वे ल भ वी मि द म हं
नं व ल ग मु कि रा मि य मे नि
द्यो य म मा यो नि च र वा ने द

महं तं व ल ग मु कि रा मि य मे
स मा नो य म स मा नो नि च र वा ने
॥१॥ महं तं व ल ग मु कि रा मि य
मे स मा नो य म स मा नो नि च
र वा नो क था कि रा मिः ॥१॥ धा गी
धृ ती पू ज नः ॥१॥ पु ष्णे न म न सा
व यं दे व स्य स वि तुः स वे स्व र्ग्य
य दा त्वा ॥१॥ ह मी पू ज नः ॥१॥
हि र राय व र्ग ह री रा गीः ॥१॥ का
व श ह रा गीः ॥१॥ वा व ते दि द व
म गि न र ल्या का सा स र्व ताः ॥
अ भू हं पदार्थः ॥१॥ दे व स्य ताः ॥
॥१॥ य दौ ध न यो ज ये रः ॥१॥ द
धा ना ल्या स त धं हि मा ॥१॥ क
रा ड पू ज नः ॥१॥ क र व स्थ ड क
ता र धन ॥१॥ अ शि मा नी यः ॥
ॐ अ शि मूर्त्ति दि वः ॥१॥ अ शि

नि न चूर्नः ॥ ॐ र ह जो ह रां ॥ १ ॥
व लि ॥ ॐ अ ध्य वो च ॥ १ ॥ दी
पः ॥ ते जो सि ॥ १ ॥ य व म ति ला
श ते नः ॥ क था द म म गुरु लो का
र ॥ ॐ क था द म श्री प्र ह नो
मि द रं य म रा ज्यं ग द दु रि
प्र ग र ॥ इ हे का य मि त रोजा
ग वे दा दे वे भ्यो ह व्यं व ह नु
प्र दा नः ॥ १ ॥ क था दा स प रि
चा यः ॥ वि ज्ञा ह ति गुरु या र
॥ उप र्श नः ॥ अ र्घं का जो द के
ने भू ध र्माः ॥ स लो रा स र
हः ॥ क व चे ना व गु द्याः ॥ गा
य त्री ज पे र ॥ ॐ वे प्र ण न रा
य वि प्र हे अ नं ता र्चि ता य धी
म हि त नो व किः प्र चो द या न
॥ १ ॥ वे नु मु द्रा द र्श ये र ॥ अ

प्रि या सः ॥ रा मि ति ष दि र्चे रा
॥ ॐ भू त जा ठ र मे ध न ज्यो त रे
की भू त भा व ये र ॥ अ न्या शी र्वा
दः ॥ ॐ अ श्रि क र्षिः प व मा नः पा
च ज न्यः पु रो हि तः त मी म हे म
हा व य नः ॥ १ ॥ त तो अ श्रि गृ हि
या ॥ ॐ अ न्य श्रि त ष ला म ग म
म द न्य हा नि प्र थ मो जा त वे दः
अ नु सूर्य स्य पु त गा व र र मी न
उ था वा पृ थि वी ॥ आ ता तं थः ॥
अ ध वा क्य पू र्ण व र ॥ ॐ अ श्रि
स्था प न सु म र्मा म तु ॥ ॐ म शि
गु हा म्य मे अ श्रि रं ग य स्यो वा
म तु प्र जा ल्पा य सु वी र्ण य मा
मु दे व ताः स च ता रं त्या ह ॥ १ ॥
इ ति अ श्रि स्था प नः ॥ १ ॥ ॐ त्व

सिन्धोमिमीतेति॥१॥ॐ म
मीति॥१॥ इत्येनअत्रि
प्रहाय॥ॐ पुकोदि वि पुकोअ
त्रिः पुधिया पुको विश्वा ओष
धीरा विवेका॥ वैश्वानरः सह
सा पुकोअत्रिः सनो देवा स रिष
स्या तु नताम्॥१॥ अथ ह्यरा॥ त
तो अथ पाटना सन पूर्वकम्॥
ॐ ऋग्वेदाय इदमासनं नमः॥ ॐ
यजुर्वेदाय इदमासनं नमः॥ ॐ
सामवेदाय इदमासनं नमः॥ ॐ
अथर्ववेदाय इदमासनं नमः॥ पू
र्वे अथ पाटनं॥ ॐ अत्रिमीते
पुरोहितं जन्यत्य देवमृषिं जनो
होता रं रत्नधातलं॥१॥ दक्षिणे
॥ॐ इवेगोर्जे वा वायवस्थ देवो
जः सविता शायि यशो रत्नमाय
कर्मसाऽआप्याय धर्मसाऽ

द्रागभाजः प्रजापती रत्नामी
वाऽअयश्मा मावतो न इदं त
मा वसं लो ध्रुवाऽअस्मिन् गो
पतो ल्यात वहि र्यजमानस्य प
शूनपाहि॥१॥ पश्चिमे॥ ॐ अश
ऽआयाहि वीतये गृहानो हयदा
तये निलोता ससि वहि वि॥१॥
ॐ शनो देवी रभिरयऽआवेध
वतु वीतये॥ शनो रभिरा व
तुनः॥१॥ पुन पूजनं॥ ॐ ऋग्वे
दाय अत्रिगो गायत्रो म देवता
य गात्री हृदसे नमः॥ ॐ यजु
र्वेदाय भारवाजगो गायत्र
देवताय त्रिषु हृदसे नमः॥ ॐ
सामवेदाय काश्यपगो गायः
इदेवताय जगती हृदसे नमः
ॐ अथर्ववेदाय वैश्वानरस्य गो
गायत्रि देवताय अनुकुपद

सेनमः॥३॥ इन्द्राय वज्रहस्ताय
सुताधिपतये सेरावतासना
यनमः॥३॥ अग्नये शक्तिहस्ता
यतंजाधिपतये द्वागासना
यनमः॥३॥ यमाय दराहस्ताये
प्रेताधिपतये महासासनाय
नमः॥३॥ तेजसाय खड्गहस्ताय
राक्षसाधिपतये प्रेतासनाय
नमः॥३॥ वज्रसाय पाशहस्ताय
जलाधिपतये मकरासनाय न
मः॥३॥ वायवे ध्वजहस्ताय पव
नाधिपतये हिरण्यासनाय न
मः॥३॥ कुबेराय सदसाय यक्षा
धिपतये अम्बासनाय नमः॥३॥
इशानाय त्रिशूलहस्ताय भूता
धिपतये वृषासनाय नमः॥
ॐ विष्णवे चक्रहस्ताय पाता
लाधिपतये कूर्मासनाय न

मः॥३॥ ब्रह्मणे अक्षहस्ताय
साय स्वर्गाधिपतये हंसास
नाय नमः॥३॥ मध्ये समस्तादे
वानामधिपतये लोहितव
र्गाय शुक्रशुक्लहस्ताय हव्य
वाहनाय स्वाहापत्नीसमन्वि
ताय तेजाधिपतये वैश्वान
राय नमः॥३॥ यथाग्नये नमः
॥ दौसमिध होममू० ॥ एकं ॥
ॐ कारेताऽस्वाहा ॥ एकं रूमी
गुह्यारः॥३॥ इषो ह देवप्रदि
तो नु सर्वर्षू को ह्यजातः सजान
स्यमानः प्रत्यजानि दत्ति स
र्वतो मुखः॥१॥ अग्निर्ब्रह्मा
करतां ॥ ब्रह्मासनम्॥३॥ ह
राय गार्भगी ॥१॥ प्रणामास
नम्॥३॥ ॐ विलोदराटमसि०
॥१॥ प्रणामेतामासनम्॥३॥

ति-च रासनः॥ प्रसातिनाय॥
ॐ देवस्य नमः॥ १॥ प्रतपनः॥
॥ ॐ प्रपुष्टं रक्षः प्र
पुष्टाऽअरातयोः निरुप
रक्षणे निरुप्राऽअरात
नः॥ १॥ कुशोनसमार्जनः॥
ॐ अनिशितोसि सपन्नहि
दाजिनं वा वाजे ध्यायेत्सम्मा
जिः॥ १॥ प्रसातिने वा रिरा पूर
राः॥ ॐ आ वो हि दे तिः॥ १॥
यवः तिलाः क्षतः प्रसातिना स
नः॥ प्रसा-यासः प्रसा पूजनः॥
॥ ॐ प्रक्षतोनमः॥ ॐ प्रजापते जे
नेमः॥ ॐ सर्वे भ्योनमः॥ ॐ देवे
भ्योनमः॥ ॐ प्रलयज्ञानः॥ १॥ प्र
साति पूजनः॥ विलम्ब-यासः॥ ॐ
विलम्बनेनमः॥ ॐ प्रसातिनाय न
मः॥ ॐ आभ्योनमः॥ ॐ अपां प
तयेनमः॥ ॐ अनन्ताय नमः॥

ॐ व हृत्ताय नमः॥ ॐ इदं विलम्ब
विचकमे॥ १॥ प्रसास्थापनः॥
ॐ आ प्रमनं प्राप्ति रोगो तिः॥ १॥
उत्तरे प्रसातिनास्थापनः॥ ॐ
विलम्बो रराटमसिः॥ १॥ पुनः पू
र्वतः पूजयेत्॥ प्रसा प्रसातिनातः॥
॥ ॐ नमो तु नील ग्रीवाय॥ १॥
मध्ये कुराट पूजनः॥ कुशोन परि
रक्षराः॥ ॐ कयानश्चिन्तः॥ १॥
॥ १॥ ततो कलशार्चनः॥ कलशार्च
नः॥ ॐ तन्वा जा मिः॥ १॥ विक्षोऽ
कलशः वेदः॥ ॥ ततो अर्चयेत्
दासा चर्चः॥ अग्न्यस्थलीः च
हृत्स्थालीस्तु कद्र विमभूक्ष
राः॥ ॐ देवस्य नमः॥ १॥ प्रतप
राः॥ ॐ प्रपुष्टं रक्षः॥ १॥ कु
शोनसमार्जनः॥ ॐ अनिशि
तोसिः॥ १॥ आग्न्यस्थाल्या
माज्यनिधायः॥ ॐ महिना

पयोसिवर्चोदाऽअसिच
 क्षुमेदेहि॥१॥आज्यस्था
 लीअशिकुराअधिशय
 नः॥१॥इवेतोर्जेत्वा॥१॥
 शोनाज्योतिनः॥१॥अपह
 ताअसुरारहासिवेनि
 षदः॥येरुपाणिप्रतिमुच
 मानाऽअसुराःसन्तःसुध
 याचरन्निपरापुरेनिपुरेये
 भरत्यशिक्षालोकापुनदात्य
 समाजोतिः॥१॥अंगारग्रहणां॥
 ॐ तं कोदर्मिमुतिभिहवसोमं
 दानमन्धसःअभिवेवेसास
 सिवेवेसाददंजीभिर्भक्त
 चा॥१॥आज्यावेष्टाणां॥१॥
 जोसि॥१॥ॐआज्यपापहं
 पुरायंआज्यपापहंसुखं॥

गुणद्वय

आज्यपापहंकीर्तिस्वर्वा
 पहरंपरं॥१॥आतःश्रुक्श्रु
 वाचराचन्दनादिपूजा॥१॥
 मरानमः॥१॥विभवेनमः॥१॥
 तदायनमः॥१॥श्रीयेनमः॥१॥
 वागीश्वयेनमः॥१॥विभाररा
 टमसि॥१॥श्रुकपूजनं॥१॥
 श्रुते॥१॥श्रुवापूजनं॥१॥
 सिधूर्धधु॥१॥धुतंजुहमात्र
 ॥१॥सप्ततःअशेषमिधःसप्त
 जिहःसप्तऽश्रुषयःसप्तधा
 मप्रियानिसप्तयानिसप्तलो
 यासप्तधावाजयन्तिस्पृष्टो
 निरापुगाश्वधुतेनस्त्राहा॥१॥
 ततोऽश्वेदसाक्रिया॥१॥योनिक
 ल्पना॥१॥ॐक्षेत्रस्ययोनिरसि
 द्देवस्यनाभिरसिमात्राहि
 ॥१॥सीमामाहि॥१॥१॥

ॐ भर्गो धानं ॥ ॐ गभो ॥ अथो
मधीनां गभो वनस्पतीनां ॥
गभो विश्वस्य भूतस्थाग्रे ग
भो ॥ अपामसि यस्याहा ॥ १॥
पुंश्वरां ॥ ॐ स्वस्तिन ॥ ५॥
॥ १॥ श्रीमती नयनं ॥ ॐ मा
हि भूर्मा प्रदाति ॥ १॥ जात
कर्मरां ॥ ॐ प्राणायस्याहा ॥
ॐ पानायस्याहा ॥ ॐ यानाय
स्याहा ॥ ॐ चक्षुषे स्याहा ॥ ॐ
श्रोत्राय स्याहा ॥ ॐ वाचे स्या
हा ॥ ॐ मनसे स्याहा ॥ निष्क
मरां ॥ ॐ काय स्याहा ॥ कसो
स्याहा ॥ कतमस्यो स्याहा ॥ धि
माधीनाय स्याहा ॥ मनप्र
जापतये स्याहा ॥ चित्तविज्ञा
नाय स्याहा ॥ दित्ये स्याहा ॥
दित्ये मह्ये स्याहा ॥ दित्ये सुम

दिका जे स्याहा ॥ सरश्च त्वे स्या
हा ॥ सरश्च त्वे पावकायै स्याहा
॥ सरश्च त्वे वृहस्पत्ये स्याहा ॥ पू
ल्ले स्याहा ॥ पूल्ले प्रपथ्याय स्या
हा ॥ पूल्ले नरीषे वाय स्याहा ॥ व
हे स्याहा ॥ वहे तुशीपाय स्या
हा ॥ वहे पुरुहूपाय स्याहा ॥ वि
ल्ले स्याहा ॥ विल्ले निभूपा
य स्याहा ॥ विल्ले क्षिपिविक्षा
य स्याहा ॥ १॥ नामकर्णी ॥ ॐ क्षि
वोना मासि ॥ १॥ फलप्राशनं ॥
ॐ याः फलनी ॥ १॥ अन्नप्राशनं ॥
ॐ अन्नपते ॥ १॥ पूजाकर्णी ॥ ॐ
मूर्धनि द्विषो ॥ अरथि-पृथिव्या
वैश्वारुत ॥ आयातमग्निं
कवि ॥ सस्याजमतिथिजना
नामा सस्यापाजं जनयति देवाः
॥ १॥ कर्णी भेदः ॥ ॐ भद्रं कर्णे

भिः शृणुयाद्देवा भद्रं पश्य
माक्ष भिर्यजत्राः स्थिरैर्गो
क्षिणुवाधं सत्तनुभिर्धर्मैर्महि
देवहितं जहायुः ॥१॥ प्रतर्धन
॥ ॐ प्रतर्धन प्रतर्धन प्रतर्धन ॥
प्रसाद्यि यज्ञोवनस्पतिर्धर्मि
यः ॥ देवि धियं मनो मह सुम
दिकामभिसाये वचो धाय शवा
ह ॥ सुतीर्थानो ॥ असदसे ॥
यदेवा मनो वगाता मनो वनुते
नः पानुते भयः स्याहा ॥१॥ सम
वर्त्तनः ॥ ॐ आह ॥ भेन राजा ॥१॥
विनाह ॥ ॐ यं मय कं जगा महे ॥१॥
भ्रमन गागा ॥ ॐ कारागा कारागा तु
रोहंति पुत्रयः पुत्रय स्याति ॥ स
वानो दूर्वे प्रतनु सह स्रेण शतेन
यः ॥१॥ ध्यानं ॥ ॐ मोक्षद प

रिद्यात्तं साति हतौ हता सनः ॥ ॐ
रादस्थ चोतारं वक्रं प्रज्वलभाक्
रघुतिः ॥ सप्रवर्गा भवे जिह्वा श्रु
धादि दक्षिणो करे ॥ स्याहा पानि
स्थिता वा मे आगच्छ सांनिकर्म
ने ॥१॥ अकादश सप्तमि होम
॥ ॐ समिधाग्निं दुव स्यात्त धृते वो
धयताति धिः ॥ आभिर्ह व्याजुहो
तनः ॥१॥ योदस्व जुह्यात् ॥ देस
मिद्रहोम ॥ सकं ॥ ॐ कारे राचा
हा ॥ सकं दुरागी जुह्यात् ॥ क्रु
वाग्ने पश्वर्धनि धाय ॥ ॐ मनुः प्र
जापत ये स्याहा ॥ इदं मन प्रजाप
तये त्याग ॥ ॐ अग्ने ये सु हि कृतं
मे स्याहा ॥ इदं मग्ने य सु हि कृतं
मे त्याग ॥ अग्ने ये ना म क र शां
॥ ॐ शिवो ना मा सि ॥१॥ ॐ यथा

नामाग्रये स्वाहा ॥ तत पूजनं
 ॐ ब्रह्मणे नमः ॥ ॐ प्रसादाय नमः ॥
 ॐ कवेदाय नमः ॥ ॐ यजुर्वेदाय नमः ॥
 ॐ सामवेदाय नमः ॥ ॐ तामवेदाय नमः ॥
 ॐ अथर्ववेदाय नमः ॥ ॐ इन्द्राय नमः ॥
 ॐ अग्ने नमः ॥ ॐ यमाय नमः ॥
 ॐ नैऋत्याय नमः ॥ ॐ वरुणाय नमः ॥
 ॐ वायुवे नमः ॥ ॐ कुबेराय नमः ॥
 ॐ इक्ष्वाक्याय नमः ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः ॥
 ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ पुनः होमं देवाय नमः ॥
 ॐ चतुर्ष्वे नमः ॥ ॐ देवाय नमः ॥
 ॐ इन्द्रे नमः ॥ ॐ विदिसे नमः ॥
 ॐ त्वर्गाय नमः ॥ ॐ मर्त्याय नमः ॥
 ॐ जातलाय नमः ॥ ॐ ज्येष्ठे नमः ॥
 ॐ स्कन्दाय नमः ॥ ॐ सूर्याय नमः ॥
 ॐ चन्द्राय नमः ॥ ॐ योगी

शिवाय नमः ॥ ॐ ह्रस्व ह्रस्व ओ जी श्व
 राय नमः ॥ ॐ ह्रस्व ह्रस्व राय नमः ॥
 ॐ आरुषि योन नमः ॥ ॐ होम देव
 ताय नमः ॥ ॐ मथाग्रये नमः ॥ प्र
 ताति पूजनः ॥ ॐ सर्वे भू दे वे भू
 नमः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॐ पितृ भ्याः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॐ उता राधार राः ॥ ॐ इत इद्रो
 वी संमल्लो इद्रो चरः आस्था
 रः ॥ अग्नेर्वहो जं वे इद्रो मवता
 त्याधावा पृथिवी ॥ इद्रो देवे भ्यः
 इद्रो आद्येन हविषा भूत्वा हा ॥ ॥
 ॐ इत इद्रो यथागः ॥ तातश्च इद्रो
 मः ॥ ॐ अग्रये स्वाहा ॥ ॐ इद्रो मग्र
 येथागः ॥ ॐ लोमाय स्वाहा ॥ ॐ
 इद्रो लोमायथागः ॥ ॐ अग्निषो
 माभ्यां स्वाहा ॥ इद्रो मग्निषोमा
 भ्यांथागः ॥ ॐ अग्नेर्गिहा सि

सुहृदं वेभ्यो धाम्ने धाम्ने मेभ्य
वयमुषेयमुषेयस्वाहा. ११।
ततो जिह्वा होमः. १०॥ हिरण्य
यै स्वाहा. १०॥ इदं हिरण्ययै
त्यागः. १०॥ कनकायै स्वाहा. १०॥
इदं कनकायै त्यागः. १०॥
रत्नायै स्वाहा. १०॥ इदं रत्ना
यै त्यागः. १०॥ हल्मायै स्वाहा. १०॥
इदं हल्मायै त्यागः. १०॥ सुप्र
भायै स्वाहा. १०॥ इदं सुप्रभा
यै त्यागः. १०॥ अतिरत्नायै स्वा
हा. १०॥ इदं अतिरत्नायै त्या
गः. १०॥ मध्ये वरुहपायै स्वा
हा. १०॥ इदं वरुहपायै त्यागः. १०॥
संप्रपन्नैः अग्नेः सामिध. ११।
वेदाहुतिः. १०॥ ऋग्वेदाय स्वा
हा. १०॥ इदं ऋग्वेदाय त्यागः. १०॥

१०॥ इदं इति वेदाय स्वाहा. १०॥ इदं इ
ति वेदाय त्यागः. १०॥ अग्नेः स्वा
हा. १०॥ इदं अग्नेः त्यागः. १०॥
यजुर्वेदाय स्वाहा. १०॥ इदं य
जुर्वेदाय त्यागः. १०॥ अन्तरि
क्ष्माय स्वाहा. १०॥ इदं अन्तरि
क्ष्माय त्यागः. १०॥ वायुवे स्वाहा
१०॥ इदं वायुवे त्यागः. १०॥ साम
वेदाय स्वाहा. १०॥ इदं सामवेदा
य त्यागः. १०॥ सूर्याय स्वाहा. १०॥
इदं सूर्याय त्यागः. १०॥ दिवे
स्वाहा. १०॥ इदं दिवे त्यागः. १०॥ अ
थर्ववेदाय स्वाहा. १०॥ इदं अ
थर्ववेदाय त्यागः. १०॥ दिग्भ्य
स्वाहा. १०॥ इदं दिग्भ्य त्यागः. १०॥
चंद्रमसे स्वाहा. १०॥ इदं चंद्रम
से त्यागः. १०॥ ब्रह्मणे स्वाहा. १०॥ इ

द्वं लो त्यागः ॥ ॐ हृदो भ्यः स्वा
हा ॥ इदं हृदो भ्यः त्यागः ॥ ॐ प्रजा
पतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये
त्यागः ॥ ॐ देवेभ्यः स्वाहा ॥ इ
दं देवेभ्यः त्यागः ॥ ॐ लक्ष्मी
भ्यः स्वाहा ॥ ॐ इदं लक्ष्मीभ्यः
त्यागः ॥ ॐ वागीश्वरीभ्यः स्वा
हा ॥ ॐ इदं वागीश्वरीभ्यः त्या
गः ॥ ॐ ऋषिभ्यः स्वाहा ॥ ॐ इ
दं ऋषिभ्यः त्यागः ॥ ॐ श्रद्धा
यै स्वाहा ॥ ॐ इदं श्रद्धायै त्या
गः ॥ ॐ मेधायै स्वाहा ॥ ॐ इदं
मेधायै त्यागः ॥ ॐ प्रज्ञायै स्वा
हा ॥ इदं प्रज्ञायै त्यागः ॥ ॐ ज
रणायै स्वाहा ॥ ॐ धीरणाये
त्यागः ॥ ॐ सदसस्पतये स्वा
हा ॥ ॐ इदं सदसस्पतये त्या

गः ॥ ॐ अनुमतये स्वाहा ॥ ॐ
इदं अनुमतये त्यागः ॥ अथ
त्रिपञ्च लोमः ॥ ॐ भूः स्वाहा ॥
ॐ इदं भूत्यागः ॥ ॐ भुवः स्वा
हा ॥ ॐ इदं भुवः त्यागः ॥ ॐ स्वः
स्वाहा ॥ ॐ इदं स्वः त्यागः ॥ ॐ
भूर्भुवः स्वः स्वाहा ॥ ॐ इदं भू
भुवः स्वः त्यागः ॥ ॐ ततो पञ्च
वाहतां ॥ ॐ त्वं नो ॥ अग्ने वरु
णास्प वि दान् देवस्य हेतोः ॥ अ
वयासि साक्षाः ॥ यजि हो व
हितमः शोशु चानो विश्वा द्वे
षा ॥ सि प्रमुमुग्ध्या समरु स्वा
हा ॥ ॐ इदं मग्निषो मा भ्यां त्या
गः ॥ ॐ सत्य नो ॥ अग्ने व सो भ
नो नी नो दि द्यौः ॥ अत्या उष

सोयुक्तोः॥ अथ यत्नो वरु
 गां ररागो वीहि मृडी कं
 सुहवीन स विद्याहा॥ ॐ
 दं मयि वरुगा भ्याग॥
 ॐ अथाश्वमेधेन भिक्षादि
 पाश्वसत्यमित्यमयाऽअसि
 ॥ अथानो यज्ञा वहा स्याथानो
 धेहि भेषजं पूं स्वाहा॥ ॐ
 दं मया श्वेमेधेन॥ ॐ ये ते श
 तं वरुगा ये सहस्रं यज्ञाः पा
 द्गावितता महातः ते भिन्नोऽ
 अथ सवितो धं विलु विश्वे
 मं यं तु मरुतः स्वर्गाः स्वाहा॥
 ॐ दं वरुगा या सवितो विलु
 वे विश्वे भ्यो देवेभ्यः मरुद्भ्यः
 स्वर्केभ्यः॥ ॐ उरुते मं वरुगा पा
 द्गामरुमदवाधमविमध्यम

ॐ श्रुथायः ॥ अथावयमादि
 त्प्रवृत्तेन वागलोऽभितयेत्या
 मत्याह ॥ १ ॥ ॐ इदं वरुणाया
 दित्याधिपतयेत्याग ॥ २ ॥ स
 श्रवप्रणीते निधायः ॥ ३ ॥ ॐ
 ताहतिः ॥ ४ ॥ ॐ कामकामद्रयेध
 द्यमित्रायवरुणायच ॥ ५ ॥ इन्द्रा
 याश्विभ्यां पूज्यः प्रजापः ओष
 धीभ्यः ॥ ६ ॥ ॐ अश्विनः स्वत्याह
 ॥ ७ ॥ ॐ वृषसोत्याह ॥ ८ ॥ ॐ प्रणी
 तायत्याह ॥ ९ ॥ ॐ रुद्रवेदायत्या
 ह ॥ १० ॥ ॐ यजुर्वेदायत्याह ॥ ११ ॥ ॐ
 सामवेदायत्याह ॥ १२ ॥ ॐ अथर्व
 वेदायत्याह ॥ १३ ॥ ॐ इन्द्रायत्या
 ह ॥ १४ ॥ ॐ अग्नेयेत्याह ॥ १५ ॥ ॐ यमा
 यत्याह ॥ १६ ॥ ॐ वैश्वदेवायत्याह
 ॥ १७ ॥ ॐ वरुणायत्याह ॥ १८ ॥ ॐ वायु

२०२०

१

संस्कृत

१५५

१५५

ये स्वाहा. ॥ ॐ कुवेराय स्वाहा.
॥ ॐ इशानाय स्वाहा. ॥ ॐ ब्रह्म
रो स्वाहा. ॥ ॐ विष्णवे स्वाहा. ॥
ॐ आदित्याय स्वाहा. ॥ ॐ सोमा
य स्वाहा. ॥ ॐ अंगाराय स्वाहा. ॥
ॐ कुचाय स्वाहा. ॥ ॐ हस्तये
स्वाहा. ॥ ॐ शुक्राय स्वाहा. ॥ ॐ श
निश्चराय स्वाहा. ॥ ॐ राहुवे स्वा
हा. ॥ ॐ केतुवे स्वाहा. ॥ ॐ जम्भ
ने स्वाहा. ॥ ॐ प्रसरो स्वाहा. ॥ ॐ
विष्णवे स्वाहा. ॥ ॐ इन्द्राय स्वा
हा. ॥ ॐ कलशाय स्वाहा. ॥ ॐ द
धितुमापतये स्वाहा. ॥ ॐ गता
पतये स्वाहा. ॥ ॐ हज्रपालाय
स्वाहा. ॥ ॐ अश्वस्था मादिष्ट
हविर्दजी विभ्यो स्वाहा. ॥ ॐ प

वगोमातकेभ्यो स्वाहा. ॥ ॐ को
माये स्वाहा. ॥ ॐ श्रीसूर्याय न
रायणाय. सदाशिवाय. गरु
लक्ष्मी. इक्ष्वाकु. नागराजा
य स्वाहा. ॥ ॐ गुरुभ्यः स्वाहा. ॥
ॐ यक्षाय. स्वाहा. ॥ ॐ यक्ष
णी स्वाहा. ॥ ॐ श्रीय स्वाहा. ॥
ॐ लक्ष्मी स्वाहा. ॥ ॐ सर्वेभ्यः
देवेभ्यः स्वाहा. ॥ ॐ सर्वदेवि
देवीभ्यः स्वाहा. ॥ ॐ इति
ताहुतिपूरणी. ॥ महाकाह
तिनादशवारं हुने. ॥ ॐ सप्त
तेऽअग्नेसामधः सप्तजिह्वाः
सप्तऽकषयः सप्तधात्वाजय
न्ति सप्तयोनिस्तृणाश्च च
ते स्वाहा. ॥ १० ॥ नततिला
हुतिं कारयेत्. ॥ श्रीहिणत्र

प्रतपराः॥ॐ देवत्याः॥१॥
ॐ प्रत्युहं रक्षः॥१॥ॐ अग्नि
सिक्तो सि॥१॥ यवाक्षतः॥
॥१॥ मिश्रः॥ पञ्चाभृतः॥ स म
॥१॥ अर्कः॥ समिधं च॥ फलं॥ पु
॥१॥ रक्तवस्त्राक्ष मालिकाः॥
॥१॥ हतनिधायः॥ अजमानेष्टु
॥१॥ ॐ इदं हविः॥१॥ इति सम
॥१॥ गायात्रिंशपदे॥ माहा
॥१॥ हतिना॥ तिलाहति पूरति
॥१॥ ॐ सप्ततरे अग्निः॥१॥ कलशा
॥१॥ इति स्था॥१॥ संख्याहति
॥१॥ हतिना॥ ॐ असंख्याता
॥१॥ स्रक्काशः॥१॥ देशावा
॥१॥ ति॥ ॐ अतोशायः॥१॥ ॐ
॥१॥ शाशां वागता पति॥१॥

ॐ सूर्याय स्वाहा॥१॥ ॐ आरुह्य
॥१॥ नरजसा॥१॥ ॐ नारायणाय
॥१॥ स्वाहा॥१॥ ॐ विलोदराट् मालि
॥१॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा॥१॥ ॐ नमः
॥१॥ शंभवाय च॥१॥ ॐ प्रसारेये
॥१॥ स्वाहा॥१॥ ॐ प्रसयमानं॥१॥ ॐ
॥१॥ माहेश्वर्ये स्वाहा॥१॥ ॐ नमः
॥१॥ भवाय च॥१॥ ॐ कोमाये स्वा
॥१॥ हा॥१॥ ॐ यज्ञवासा॥१॥ ॐ व
॥१॥ ल्मये स्वाहा॥१॥ ॐ इदं विलु
॥१॥ ॐ वातं ह्ये स्वाहा॥१॥ ॐ य
॥१॥ स्य हर्मो॥१॥ ॐ इन्द्राये स्वा
॥१॥ हा॥१॥ ॐ गातार मपि॥१॥ ॐ
॥१॥ सुशायये स्वाहा॥१॥ ॐ जातवे
॥१॥ से॥१॥ ॐ महालक्ष्मी स्वाहा
॥१॥ ॐ हिरण्यगर्भं॥१॥ ॐ काम

गती र्गितोशा यत्नाहा. ॥ १ ॥
नमो गतोभ्यः ॥ १ ॥ ॐ नमः शिवाय
ये स्वाहा. ॥ १ ॥ ॐ नमः शिवाय
ये. ॥ १ ॥ ॐ गुह्ये ॥ १ ॥ ॐ स्वाहा.
॥ १ ॥ ॐ गतवेदसे. ॥ १ ॥ ॐ स्वाहा.
॥ १ ॥ ॐ नमः शिवाय. ॥ १ ॥ ॐ न
मो सुसर्पभा. ॥ १ ॥ ॐ वाग्म
ये स्वाहा. ॥ १ ॥ ॐ गती र्गितो
॥ १ ॥ ॐ विष्णु सत्ये स्वाहा. ॥ १ ॥
ॐ गती र्गितो. ॥ १ ॥ ॐ नाजे भ्यः
स्वाहा. ॥ १ ॥ ॐ गती र्गितो. ॥ १ ॥
ॐ नाजे भ्यः स्वाहा. ॥ १ ॥ ॐ
गती र्गितो. ॥ १ ॥ ॐ हरिश्च
केशभ्यां स्वाहा. ॥ १ ॥ ॐ नमः शि
वाय य. ॥ १ ॥ ॐ राक्षसा
य यगाय भ्यां स्वाहा. ॥ १ ॥ ॐ स
रक्षशिरिषा. ॥ १ ॥ ॐ सु र

भार्ये स्वाहा. ॥ १ ॥ ॐ पावकानः
॥ १ ॥ ॐ भगवत्ये स्वाहा. ॥ १ ॥ ॐ
गतवेदसे. ॥ १ ॥ ॐ भीमसे
नाय स्वाहा. ॥ १ ॥ ॐ नमः शिवाय
य. ॥ १ ॥ ॐ हरि सत्ये स्वाहा. ॥ १ ॥
ॐ गती र्गितो. ॥ १ ॥ ॐ नाजे
स्वाहा. ॥ १ ॥ ॐ नमः शिवाय
य. ॥ १ ॥ ॐ भगवत्ये स्वा
हा. ॥ १ ॥ ॐ भगवत्ये स्वा. ॥ १ ॥

ॐ हरि स्थानादि सर्वदेवाय नमः
स्वाहा. ॥ ॥ ॥ इति देशात्

॥ १॥ ततो यथा कर्मकारये
 ॥ २॥ ज्ञान कलश विषयं यत्
 ॥ ३॥ देव सच येन ॥ ४॥ अथाशोच
 ॥ ५॥ यत् ॥ त्रितयेनो ॥ प्रतिस्थाप
 ॥ ६॥ कथ्यते ॥ ततः अथासंकल्पना
 ॥ ७॥ अथ वाराहेत्यादि ॥ वाक्यं
 ॥ ८॥ वरु ॥ देशवलिदापयेन ॥
 ॥ ९॥ आचार्येणा ॥ नलो मे आति दु
 ॥ १०॥ यात ॥ अं असंख्याता ॥ ११॥ अं
 ॥ १२॥ शान्ति काय स्वाहा ॥ १३॥ अं ओह शांति
 ॥ १४॥ अं शान्ति रत्न ॥ १५॥ अं पुष्पिका
 ॥ १६॥ अं अथ यवकं जगाम
 ॥ १७॥ अं पुष्पिका रत्न ॥ राजादेश
 ॥ १८॥ अं हतिना ॥ अं राजा मध्य
 ॥ १९॥ अं गोपामृतस्य दीदिवि
 ॥ २०॥ अं वदमानं ॥ अं देवमेसन

पिते वसू नवेने लूपाय नोभव
 सतश्चानः स्वकं ये स्वाहा ॥ १०॥
 ॥ ११॥ अमुक राजास्य ॥ १२॥ सिद्धि र
 ॥ १३॥ पुनत्रिधा ॥ १४॥ अं प्रजापतेन
 ॥ १५॥ त्वदेता न्येनो विगा रूपाशिप
 ॥ १६॥ तिता व भूव ॥ १७॥ यका मातो जुह
 ॥ १८॥ वतो नो मतु व य पूं त्या म पत
 ॥ १९॥ यो रयी रणा पूं स्वाहा ॥ २०॥ प्रजा
 ॥ २१॥ सुतो सतु ॥ २२॥ पुनत्रिधा ॥ २३॥ अं य
 ॥ २४॥ अं कर्मो रह रह वित्त म जेव अ
 ॥ २५॥ मात्वमः ॥ २६॥ तस्मै देवाः धिप्रवत्त
 ॥ २७॥ अथ प्रसतास्य तिस्राहा ॥ २८॥
 ॥ २९॥ अह मापिल हमी प्रसि ते जो व
 ॥ ३०॥ अं रत्न ॥ पुनत्रिधा ॥ ३१॥ अं कुवा
 ॥ ३२॥ अं कुं वो य यज मानो मि नो

यत्तेने प्रजायापशुभिर्भूया
 २॥ यत्तेने जाला पृथिवी दूष्य
 धामिदुस्य हृदि रसि विष्णो ज
 न स्वकाया स्वाहा ॥ १ ॥ यजमा
 नाना यथा शास्त्रोक्त फल प्राप्ति
 रक्षु ॥ पुनः त्रिधा ॥ ३ श्री श्वते
 ॥ १ ॥ यजमानो ना अचरति दू
 रक्षु ॥ ॥ ॥ प्रतिक्रान्तः ॥ ॥ त
 तो श्री हितो मः ॥ ॥ यद्यप्यन्य
 लाज्जाः समिधः गुडोदनः द
 धोदनः श्री फलः किं च ना
 दी केलः चंदरी फलः प्रिय
 गुः सुमुखः सतपुत्रः श्री
 ततिलः रुक्म तिलः शिक
 तुः रक्त तिलः शि फलाः ना
 ग केशरः पद्म केशरः वन्द

न. * मूल. * वधान. * इ. * अ.
 ह्रीं हि. * ॥ यवधान्यनाथामु
 कं कलावं मायनेव व. ॥ कुला
 थं कालमायं व. सिद्धाथं का
 कर्म श्री हि. ॥ ११॥ * ॥ दुर्गा ह्यतः प
 यत्न ह्रीं हि कुला. ॥ अथो न
 रत्नममुं याम्. ॥ १०८॥ ॥ देवा
 दि. * ग्राह्यतामां कल्प. ॥ * ॥ दि
 गार्चताम्. ॥ ॐ नारायणमिन्द्रादि
 देवताविशेषवेदोचारताम्. ॥
 ॐ घृतं घृतपावान् इति. ॥ ११॥
 वलौहो घृतिका वलयेदा पय
 र्. ॥ घृत घृतिका जवेत्. ॥ होम
 ॐ यौः शान्तिरिति. ॥ ११॥ घृतं जु
 ह्यात्. ॥ महाव्याहतिना दौ
 गरणी. ॥ ॐ नृपैवायं मेक. ॥ *

* ११ ॥ ॐ यन्मोहिदं यस्तु वो ॥
 ११ ॥ द्वितीयं गा यगीयं पठे
 र ॥ ॐ स्वस्थायु ये स्वाहा ॥
 ॐ त्रिनो ॥ अग्ने वरुणा स्या वि
 हा देव स्य हे जो ॥ अवयासि
 विवाः ॥ यजिषो वा हुतमः
 शो शुभानो विश्वा देवा ॥ ११ ॥
 प्रमुमुग्धा स्मर ॥ ११ ॥ ॐ सत्त्वं
 नो ॥ अग्ने वमो भमोतीने दि
 वा ॥ अस्मा ॥ उ व लो य वो ॥
 अ व य ह रा गो व र रा ॥ ११ ॥
 गो गो हि मृडी क ॥ सुह वो
 न ॥ स धिः ॥ ११ ॥ ॐ याश्वाग्ने स्य
 नभिः शक्तिपाश्च स व मि व
 या ॥ अ सिः ॥ अ अ यानो य न
 व हा स्या नो धे हि भे य ज ॥ ११ ॥
 हा ॥ ३ ॥ ॐ ये ते शतं वरुणा ये स
 ह त्रि य ना मा सा विरुता म ह नः

॥ तेभि नो ॥ अ य स विरुः वि ॥
 मुं च तु म ह नः स्वर्का य स्वाहा ॥
 ॥ ४ ॥ ॐ उ र ता म व र ता मा श म
 स्म र वा ध म ॥ श्र था य ॥ अ यो
 व य मा दि ये व्र ते त वा ना ग शो ॥
 अ दि त ये स्मा म स्वाहा ॥ ५ ॥ च तु
 पा हि हो म ॥ ॐ पा हि नो ॥ अग्ने ये
 स्वाहा ॥ ॐ पा हि नो विश्व दे से स्वा
 हा ॥ य न पा हि वि भा व से स्वाहा ॥
 ॥ सर्व पा हि स्वि स्रु त ये स्वाहा ॥
 ॥ नृ नृ ति र तां तु लो मि स्वाहा ॥ अ
 ति र तां तु लो मि स्वाहा ॥ अ ना ना
 ते ज ना ना ते त सर्व क्रि या ते म
 स स्वाहा ॥ सर्व त द यो क ल्प ये
 दि म हे य था हि न स्वाहा ॥ ६ ॥
 ॐ वै श्वान रा य वि द्म हे अ न ना
 वि ष्मि म हि त नो वा रु प्र को द या
 ॥ स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ दे व ह त म्ये न

सो वजन मसि त्वाहा. मनुष्य
स्तस्यै न सो वयज न मसि त्वा
हा. पापि तस्यै न सो वयज
न मसि त्वाहा. आत्मकृतं
न सो वयज न मसि त्वाहा.
मेन सत्यं न सो वयज न म
सि त्वाहा. यद्वाह मेना वि
दायकार यन्मा विदासा
त्यस्यै न सो वयज न
मसि त्वाहा. १॥ वडा कु
ति. ॥ ॥ त्यजिनऽइन्द्रो. ॥
ॐ पयः पृथिव्या. १॥ ॐ लो
रुतमसि. १॥ ॐ जग्निदे
वता. १॥ ॐ शोः शान्तिरं.
१॥ ॐ अयं न्यकं. १॥ ॐ
॥ देवं प्रालगादहिरगा. १॥

दनं. ॥ वलिह र गां. १॥ ॐ का
मं का मधु चेष्टु ध्व निजा
यव सुगाय च. क इ द्याया
शिव मां पूजो प्रजाभ्यऽओ
वधी भ्यः. १॥ १॥ संश्रव प्रात
नं. १॥ १॥ ॐ सु मित्रि जानऽआप
३ओ व. १॥ १॥ प्रगा गा भवे क
॥ १॥ १॥ गत पूजा कारयेत्. १॥
पूर्व वर वाचं सर्व पूजा ५॥
सु सुहृत् मत्तु. १॥ ॐ देवा गा
तु विदो गा तु विवा न्वा गा तु
मितः मन सत्यतिऽइ मदे य
नो म् स्याहा वागे ध्वय त्वाहा.
१॥ १॥ १॥ ततः आर्ष सावहे
रं. १॥ १॥ ॐ आणा यत्तु स मे
तु ते विश्वतः सो मधु र्वा भ

वा. वा. ज. स्य सं. म. धे. ॥ १ ॥
संतं यथा ॥ सिसमुजं-
तुवाजाः सं. ह. द्या. न्या. भि
मा. ति. वा. हः ॥ आ. प्या. य
मानो अ. म. ता. य. सो. मा. दि. वि
श्र. वा. ॥ २ ॥ आ. प्या. य. स. मा. दि. त. म
लो. मा. वि. ॥ ३ ॥ आ. प्या. य. स. मा. दि. त. म
वानः स. व. थ. स. म. म. स्वा. व
॥ ३ ॥ आ. तो. व. सो. म. नो. य
मु. पर. मा. वि. स. व. स्था. ह. ॥
अ. यो. लो. का. न. या. गिरा. ॥ ४ ॥
तु. भ. ना. आ. ग. न. स. म. वि. श्रा
मु. धी. त. यः. पृ. थ. क. ॥ अ. यो
का. मा. य. वे. मि. रे. ॥ ५ ॥ अ. त्रिः
प्रि. ये. सु. वा. म. सु. का. मो. भू. त

स्य भ. व. स्य. मा. दे. को. वि. रा.
जा. ति. ॥ ६ ॥ ॐ. प. यः. पृ. थि. व्यां
प. य. ओ. व. धी. ॥ ७ ॥ ॐ. दे. व. स्य
वा. स. वि. तुः. ॥ ८ ॥ ॐ. अ. त्रि. नो
भै. व. ज्ये. ॥ ९ ॥ ॐ. दु. प. हो. दि. व
मु. चानः. सो. तो. म. ला. दि. वः. पु
तं. प. वि. जे. रा. वा. वि. मा. पः. भु. त्वं
तु. मे. वि. न. सः. ॥ १० ॥ ॐ. उ. द्र. वं
त. म. स. स्य. रि. ॥ ११ ॥ ॐ. श्री. श्र
ते. ॥ १२ ॥ ॐ. न. मो. वृ. ल. रो. न. म
सो. ग्र. ये. न. मः. पृ. थि. ये. न. सो. ओ
व. धी. भ. पः. ॥ न. मो. वा. वे. न. मो
वा. व. स्य. त. ये. न. मो. वि. ल्पु. वे
म. ह. ते. क. रो. ति. ॥ १३ ॥ ॐ. अ. त्रि
रि. द्र. स्य. सो. म. स्य. दे. व. ना. मु
नि. भि. र्ध. व. रः. ॥ अ. रि. स्य. त

सचमहि स्यामप्रतत्पत्तः ॥ १४ ॥
ॐ देवा सो दिव्यो कादस्थ
पृथिव्यामच्यो कादस्थते
देवा सो यज्ञो यिमं जुषध्वम्
॥ १५ ॥ ॐ पुनस्त्यादित्या ॥ १६ ॥ ॐ
आब्रह्मशास्त्रोति ॥ १७ ॥ ॐ प्रथ
मादित्यै ॥ १८ ॥ ॐ हिमस्यत्या
वरायनासाले परिवायामसि
॥ १९ ॥ ॐ दोनो भुवो ग्रेर्वातुभ
वजं शीत हि दोहिनो भुवो ग्रेर्वा
त्वातुभवेवजं ॥ १५ ॥ ॐ अतिकार
त्रिमज्जनदुर्वादसुसुरागमजः
अजातपुत्रपद्मायाहृदयेम
मुहुरयते ॥ २० ॥ ॐ विपुलं व
नं वक्राशी च द्वाज वेदमाका
यः ॥ माश्चर्य्यपुत्राश्चकार

रामुभौनवपिगाखलोहि
तग्रीवकुलभवर्गानमस्तु
ते ॥ २१ ॥ ॐ अस्यानपरिहर
स्योनाभसाशरस्यमयेय
यो ॥ २२ ॥ ॐ दृष्टागदहातुवतरा
स्त्यममिषिचतु ॥ २३ ॥ ॐ शत
पत्तोनिधनं यान्निजमर्षं व
सते जसा ॥ कपिलजटास
वभ्रह्मचाग्निप्रयक्षदैवज
॥ २४ ॥ ॐ वरुणाचवक्राद्यज्ञेम
मपुत्राश्चरक्षति ॥ यावदादित्य
ज्ञपातयावक्राजतिचंद्रमाया
वक्राचप्रकाशातितावक्रावत
यासह ॥ २५ ॥ ॐ येन केन प्रका
रतो नोहनाकोनजीवतियदे
षामुपकाराणां मजीवतिस

जीवः॥ तकोशफैहसिनो देवा
नत्पविपुलेन वृथिवारस्यं भु
च्यत्येकद्वये साररातेन॥ २५॥
॥०॥ मराडलः लोत्रमू॥ ४॥ उंम
मोअग्रुयेनमः॥ उंतेज हं ह्याति
विश्वं भवकलुषहरं पावनं
भुवः स्वः सर्वोयं व्याप्ति विश्वमु
निगगानमिर्भास्करं शक्ति
तत्तं॥ जंतोश्चाभ्यं तरात्मा क
नकमयिकरं शू व्यशू द्मांति
शू द्मं॥ वदेवरा क केतुं दि
जनिपिलगुहं सोवि के स
भवतं॥ ये ये यज्ञ सुसस्था
दिशि विदिशि गता संस्थिता
देवयाता ऊ तदेवा वं हिम ध्ये
कलपरिजन्ता मराडले स्थिति
ते वा॥ ते सर्वे सन्तु देवा अ

भिमतफलदा मंत्रं सतो व
मुद्रा मंत्रा मुद्रार्थहिना यज
नविनिवशा हि न दोष क्षम
स्व॥ इन्द्राद्या लोकपाला निज
दिशि चरताः स्वस्वमुद्रा स्वयं
ता आदित्यादि ग्रहे शावसति
भुवि सदा जम देवत रूपा
कदा यो गा सती र्धा गता
गुह वदु का यो गिनी द्वात्र
पाला सिद्धि श्रेयो ददातु म
वतु व सु मती यज्ञ पू र्णा सु
भोक्तु॥ रक्ताशुक्ला च कल्पा
त्रिपदः पदगता गी नि दे वा
त्रिमात्रा॥ तत्प्रा नि त्रि पु का
रा न्य म पि च ज न नी गी शि
काले प्र वे शा॥ माता वे द
सज यतु ज य ता नि न्य रूपा

शिवान्मा. ॥ ॐ ज्येदोयस्य
पादोयजुरपदपदः सामवे
दोयहतां. ॥ सकोथार्जोदितो
यं शतपदवदनं व्याहती वृ
त्तचौखेन. ॥ गायत्री यस्य गा
त्रं न यनउपनिषद्प्रमाणो
तैवदुष्टावितुप्रदन्मृता
भवतुवसुमती यशस्वती
वसतः. ॥ अस्मद्मंजाधार्म
त्वास्तु कलशस्थदिलदिजे
वगा. वैश्वानरदेवतासुप्रो
तागरदाभवतु राजा वर्म
विजीयरतु. ॥ प्रजासुखीन
संतु. ॥ सर्वे सत्तासुखी भव
तु. ॥ पञ्चकाले वषा भव
तु. ॥ द्विपदचतुष्पादां नां श्री

तिर्भवतु. ॥ पुष्टिर्भवतु. ॥
अस्मद्राक्षधिपती श्री श्री
श्री अमुकवर्मरास्य. स्वतु
सिद्धिरस्तु. यजमानस्य स
गरापरिवाशरणी आमुता
रोज्यमेत्यर्थजनधनल
क्ष्मीसंज्ञातिसंज्ञानदृष्टिर
स्तु. ॥ यथाशास्त्रोक्तफलसं
प्राप्ताभवतु. ॥ यजमानो
नोअचलसिद्धिरस्तु. ॥
अहमपिलाक्ष्मीसंज्ञान
प्रसिद्धिर्भवतु. ॥ सर्वे ग
तिसर्वभूतानां सर्वस्थिश्च
वरावर. ॥ कर्मणामनसा
वाचातनोपायादिकारु
पा. अहंतां वाक्यहिनचत

नमो देवतात्मने ॥ मंगलार्चनं ॥
 याहि नमः किंही नमः ॥ य
 यः ॥ जपलौ मार्य साहि नमः ॥
 मयतां परमेश्वरम् ॥ १ ॥ मस्त
 ॥ वाक्यपूर्ववा ॥ अजगत्का
 दिः ॥ ॥ अग्नि आशीर्वा ॥ ३ ॥
 अग्नि कृषिः ॥ १ ॥ आमाशी
 र्वा ॥ ३ ॥ अंय स्यात्तुम् ॥ १ ॥ य
 जमाना माशीर्वा ॥ ३ ॥ अं दीर्घा
 पुत्त्याः ॥ १ ॥ प्रसावि सज्जनः ॥
 अं तिव प्रलतात्पते देवय
 तस्थे मरुः ॥ उपपुयं तुम
 रतः मुदानवः ॥ इद्रा प्रनृभ
 वासवाः ॥ १ ॥ प्रसावि स
 ज्जनः ॥ अं कत्वा विमुच्यते
 सत्वा विमुच्यतिः तत्स्येत्वा

विमुच्यति. ॥ यो वाय र हा सा
मा गो सि. ॥ १ ॥ प्र सा मा च न.
ॐ अ वा अ या न च रि ष र
से न स मं तु म हि प त्वा ग्रे जा
ग र्ग त त्या र्ं सू न व र्ध सा प्र
ज या च ध ने न च. ॥ १ ॥ अ ह
पा त न कु श उ प य म न कु श
ॐ ह या त. ॥ ॐ स म्ब हि र्ं
ह पि वा च ते न स मा पि त्यै र्
सु भिः स म र्द्रि स मि द्रो मि
श्व दे वे भि र्ं दि य न भो ग
दं तु य र स्वा ता. ॥ १ ॥ ह त्त त
प रां. ॥ ॐ त नू पा अ ग्रे सि त
न्य म्मे पा था यु र्ं अ ग्रे त्या
यु र्मे दे हि. व र्ग दा अ ग्रे सि
व र्गे मे दे हि. अ ग्रे य न्मे न

त्या उर्न न म आ पृ रा न ॥ मे वा
 मे दे वी स वि ता मे वा दे वी
 सर स्व गी आ द वा द वा तु मे
 वा व शि नौ दे वा वा ध ॥ पु सु र
 त्र ओ अं गा नि च आ प्या य
 ता मू ॥ वा ग्रा रा च धु ओ नं
 ज ता व ल मू ॥ भ स्म ना ति
 ल कं का र मे र ॥ १ ॥ वा क
 र्थ य म द गीः क द व प स्य था
 पु र्थ ज दे वे वृ था पु र्थ ज नो
 ॥ अ तु था पु र्थ ॥ १ ॥ अ र्ध
 पा गो द के न भ त्रि क रा न ने
 रं ये र ॥ उ य न य न ग न
 य न प ति कृ द त्वा यो नि
 ग द त्वा हा ॥ १ ॥ प य ते य
 शो य न प ते स ह सू कि वा

फः सर्ववीरतां नु यत्वा ल॥ १०
शेषलोम॥ ५॥ यदा विसर्ज्य
॥ ३॥ गङ्गा गङ्गा सुरश्रेष्ठ आमा
संतारयाना॥ ४॥ यत्र ब्रह्माद
यो देवतगङ्गा गङ्गा तनः॥ १॥
प्रसाधा का रं गुहाया र॥ ३॥ अक्ष
ता यकर्म सो स्वाहा॥ १॥ अने ता
मूल दद्यात्॥ न्यास कुर्यात्
॥ ५॥ कला दा दि वि सञ्जनं॥ ३॥
उद्य सं ज म स॥ १॥ अभिषे
क जा क्षी वा द॥ सर्व म कुलं
॥ हरा चंद्राणि॥ १॥ सूर्य लाहि
॥ पूर्व वा वाच्यं॥ २॥ इति का
त्यायनोक्तं शुक्ल शास्त्रिकर्मः
समाप्तम्॥ १॥

